शूरवीर सिंह खरोला
अध्यापक गणित व विज्ञान
राजकीय आदर्श अपर प्राइमरी स्कूल
लाटा, उत्तरकाशी

अनुभूतियां सहेजना भी है शिक्षक का दायित्व

प्रधानाध्यापक	–	चन्द्र मोहन सिंह चौहान
सहायक अध्यापक	–	कुशला प्रसाद भट्ट (भाषा), बलवंत सिंह बिष्ट (सामान्य), नरेन्द्र सिंह चौहान (अंग्रेजी), बुद्धि सिंह पंवार (सहायक)
सी.आर.सी.सी.	–	संगीता जोशी
भोजन माता	–	राधा देवी, गजेंद्री देवी
नामांकन	–	39

आज के शैक्षिक विमर्श में चारों ओर शिक्षकीय कर्म व शिक्षा की निराशाजनक तस्वीर उभारने की कोशिश होती आ रही है। मगर इस विमर्श में ऐसे अनेक शिक्षक साथियों के उदाहरण दिए जा सकते हैं जो अपने चिंतन व कर्म से इन्हीं परिस्थतियों में बेहतर काम कर रहे हैं। इनमें से ही उम्मीद की एक बानगी शूरवीर सिंह खरोला भी हैं। उनका विद्यालय जूनियर हाई स्कूल लाटा भटवाड़ी ब्लॉक में जनपद मुख्यालय उत्तरकाशी से लगभग चौबीस किलोमीटर की दूरी पर गंगोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग से लगभग दो सौ मीटर की पैदल खड़ी पगडंडी पर है। प्राकृतिक वैभव व शिक्षकों के अतिरिक्त प्रयासों ने इसे खूबसूरत रंग बख्शे हैं।

इन सबसे बढ़कर और जो किसी भी स्कूल के लिये मिसाल हो सकती है वह बात है इस स्कूल के 58 साल के युवा शिक्षक शूरवीर सिंह खरोला में। अपने रिटायरमेंट से चंद कदम दूर खड़े इस शिक्षक के पास आज भी सौ साल के सपने और ऊर्जा बाकी हैं। जहां रिटायरमेंट करीब आते–आते हमने कई साथियों को अपनी नौकरी के कुछ आखिरी साल उलटी गिनती गिन–गिन के काटते हुये देखा है वहीं एस.एस.खरोला अपने स्कूल के बच्चों से गहरा जुड़ाव बनाते हुए हर रोज एक नया सपना बुनते हैं।

आप उन शिक्षकों में हैं जो निरंतर नवाचारों के जरिये लगातार अपने शिक्षण

कार्य को नए पायदान पर ले जा रहे हैं। गणित जैसा विषय जो कि अमूर्त प्रकृति के कारण हमेशा बच्चों के लिए एक कठिन विषय के रूप में परिभाषित रहा है, उसको भी आपने अपने वर्षों के अथक प्रयासों और अनुभव से रुचिकर बनाया है। आपने हर रोज कुछ नया सीखने–करने और इस विषय को बच्चों के लिये सुगम बनाने के लिये शिक्षक अधिगम सामग्रियों (टीचर लर्निंग सेंटर) का निर्माण कर गणित विषय की अमूर्तता को कम करने का अभिनव प्रयास किया है। आपके विद्यालय में आज एक समृद्ध गणित प्रयोगशाला है जो देखते ही बनती है। इसके साथ ही विज्ञान विषय को कर के सीखना, बच्चों के जीवनानुभवों को प्रकृति की विशाल किताब के साथ जोड़कर प्रयोगिक विधियों द्वारा अवधारणाएं पुष्ट करते हैं।

शिक्षा को लेकर आपका जुनून ही है कि आप अक्सर कहते हैं कि "यदि मुझे भी फिर जन्म लेने का मौका मिला तो मै दूसरे जन्म में भी शिक्षक ही बनना चाहूंगा" मगर सोचने की बात यही है कि इस पेशे में ऐसा क्या है जिसके लिए दो जीवन काल की कामनाएं की जाएं? दरअसल शिक्षकीय चिंतन व कर्म इंसान निर्माण की सृजनात्मक प्रक्रिया है। इसमें बच्चों की समझ, ज्ञान, कौशल,विवेकशीलता व संवेदनाओं का विकास तथा उसे जीवन में उपयोग करने की क्षमता विकसित करना है। यह सभी ऐसे सुन्दर कार्यभार हैं जिस पर मौजूदा शिक्षक को काम करने में न केवल सक्षम होना होता है अपितु नये समृद्ध करने वाले अर्थ भी देने होते हैं। इस रूप में देखें तो एक शिक्षक से बौद्धिक ईमानदारी, सत्यता, सामाजिक प्रतिबद्धता, काम के प्रति निष्ठा, प्रेरणा व पेशेवर नैतिकता की गंभीर अपेक्षाएं हैं और ऐसा मूल्यपरक व उत्कृष्ट जीवन कौन नहीं जीना चाहेगा? ऐसे कामों में रहने से स्वयं का भी आत्म उन्नयन व अंतरण होता जाता हैं। एक दार्शनिक उक्ति है कि "यह

विश्व एक रंगमंच है" इस रंगमंच पर ऐसी उत्कृष्ट भूमिका का चुनाव व निर्वहन करना अपने उद्देश्य रूप में ही खूबसूरत है।

यूं तो खरोला जी से हमारा संवाद काफी प्रगाढ़ रहा हैं, मगर 14 घंटे में 56 किलोमीटर की पैदल यात्रा भवान से उत्तरकाशी हमने एक साथ की थी। बात तब की है जब 2013 में हमारे सूबे के पहाड़ी क्षेत्रों में भीषण आपदा आयी थी। मैं व खरोला जी देहरादून में सतत व व्यापक मूल्यांकन को समझने के लिए आयोजित कार्यशाला में साथ थे और उत्तरकाशी के लिए लौटते समय भवान में फंस गए अगले दिन सभी सड़के भारी वर्षा से तहस नहस हो चुकी थी। हमने एक ट्रेकर (छोटी सवारी गाड़ी) में बैठे–बैठे रात गुजारी थी। मैंने खरोला जी से कहा भी कि एक कमरा ले लेते हैं। मगर उन्होंने उस व्यक्ति के लोभी प्रस्ताव को सिरे से नकार दिया जो व्यक्ति अनाप–शनाप किराया मांग रहा था। उन्होंने उसे फटकारा कि 'बात ज्यादा पैसे की नहीं है बात वाजिब न होने की है। इस समय आपको परेशान लोगों की मदद करनी चाहिए और आप हैं कि लोगों की दुश्वारियों का नाजायज फायदा उठा रहे हो।' ऐसे विकट समय में मूल्यों से समझौता न करना हमने भी सीखा और यह भी जाना कि एक शिक्षक अपने आचरण से कैसे कोई बात धीरे से सीखा देता है। हम अगले सुबह पैदल ही चल दिए। इस यात्रा में हमने शिक्षा, खेती किसानी, से लेकर भ्रष्टाचार, शिष्टाचार, दुष्टाचार पर बहुत बातें की थी। एक पड़ाव पर हमने बेयर ग्रिल्स (Bear Graylls) व तमाम साहसिक यात्रियों का स्मरण करते हुए, तालाब के पानी से बनी मैगी भी खा डाली और आगे चल दिए। उत्तरकाशी पहुंचाने तक हमारे पैर उठने के बजाय घिसट रहे थे। हम करीब–करीब मटियामेट थे। शरीर में बहुत खरोचें लगी थी। कपड़ों पर इतने कुमरू (गोखरु) लगे थे कि कपड़ों का रंग समझ में नहीं आ रहा था। तब खरोला जी ने विदा होते अपनी पारदर्शी

मुस्कान के साथ एक वाक्य बोला कि आज यह तय हो गया कि हम चार किलोमीटर प्रति घंटा चल लिए। अतः हम फिट हैं, इससे सारी थकान तरल हो गयी थी।

शिक्षा हित में अपने कर्म को समृद्ध करने के लिए जो लगन और निष्ठा उनमें है वह फिर साबित होती है। वे अपने प्रोफेशन की समृद्धि या कि योगदान के लिए मिले किसी भी अवसर को यूं ही नहीं जाने देते, वे हर संभव भागीदारी की कोशिश करते हैं। उस समय वे अपने स्कूल जाने के लिए कितना जोखिम उठाते थे हम जानते हैं। कई बार जान पर बन आयी पर तब भी वे अपने कर्तव्य पर डटे रहे। यह इस दौर की मामूली बात नहीं है।

हमने देखा कि जब वे बच्चों के साथ होते हैं तो उनको कैसे संवारते हैं. उनके अकादमिक काम की कुछ बातें जितना हम जान पाए इस तरह हैं कि वे विगत 35 वर्षों से जूनियर स्तर की कक्षाओं में गणित एवं विज्ञान विषयों का शिक्षण कर रहे हैं। उनकी प्रथम नियुक्ति 18–03–1982 में जूनियर हाईस्कूल में सहायक अध्यापक (विज्ञान, गणित) के पद पर हुई थी, इन वर्षों में उन्होंने महसूस किया कि ग्रामीण परिवेश के अधिकांश बच्चों का गणित में न्यून अधिगम स्तर रहता है, गणित से उन्हें डर सा लगता है, बहुत से बच्चे हासिल के घटाने, गुणा एवं भाग की संक्रियाओं को हल नहीं कर पाते हैं, स्थानीय मान, असमान हरों वाली भिन्नों पर आधारित मूल गणितीय संक्रियाओं को बहुत कम बच्चे हल कर पाते हैं। ऐसे ही उन्हें ज्यामिति की रचनाओं, बीजगणित में गुणनखण्ड, सर्व समिकाओं को हल कर पाने में समस्यायें आती हैं। कारण ढूंढने पर पता चलता है कि बच्चे जिस परिवेश से आते हैं, उन्हें घर पर मार्गदर्शन व मदद करने वाला नहीं है, वे केवल कक्षा शिक्षण तक ही सीमित हैं। कक्षा शिक्षण के तौर तरीके भी कुछ खास प्रभावी नहीं लगते जिससे बच्चे गणितीय अवधारणाएं समझ पायें। अब बच्चों को अधिगम स्तर तक लाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। पाठ्यक्रम को देखते हुए, गणित शिक्षण करना होता है। जो बच्चे पिछड़ जाते हैं वे फिर पिछड़ते ही जाते हैं। उन्हें अच्छा शैक्षिक माहौल एवं मार्गदर्शन नहीं मिल पाता है। इनके लिए कैसे शिक्षण किया जाय? समय का नियोजन किस प्रकार किया जाय? कौन से तरीके अपनाये जाएं? सम्बोध को रूचिकर कैसे

बनाया जाय? गणितीय अवधारणाओं तक पहुंचने हेतु कौन सी शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग हो जिससे बच्चे गणितीय अवधारणाओं को सरलता से सीख सकें। ऐसे ही कई प्रश्न उनके मन में उभरते हैं। इन्हीं समस्याओं से जूझने हेतु स्थूल (मूर्त) वस्तुओं की सहायता से शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण कर उसका उपयोग करने का प्रयास कक्षा शिक्षण में किया। जिनसे बच्चों की गणितीय संक्रियाओं/प्रकरणों को समझाने में मदद मिलने लगी। उन्हें कहीं पर कोई गणित या विज्ञान सम्बन्धी सीखने–सिखाने की सामग्री की जानकारी मिलती है, वे उसे तुरन्त बनाने का प्रयास करते हैं और उसका उपयोग कक्षा शिक्षण में करते हैं। उन्होंने बताया कि "आज ऐसा करते–करते मेरे विद्यालय में गणित एवं विज्ञान के शिक्षण अधिगम सामग्री का काफी संग्रह है, जिसे मैं गणित/विज्ञान प्रयोगशाला कह सकता हूं। इन मूर्त वस्तुओं से गणितीय एवं विज्ञान की अवधारणाओं को सीखने में काफी मदद मिलती है, बच्चे खेल–खेल में सीखने का प्रयास करते हैं। मुझे बहुत से प्रशिक्षणों एवं कार्यशालाओं में जाने का अवसर मिला है, जहां मैंने बहुत कुछ सीखा और उन्हें अपने विद्यालय के बच्चों के साथ प्रयोग करता हूं। आज भी जहां मुझे कुछ नवाचारी सामग्री मिलती है, या सीखने को मिलता है या शिक्षा व शिक्षण की बात होती है, मैं वहां अवश्य प्रतिभाग करने का प्रयास करता हूं। ऐसे ही स्वैच्छिक शिक्षक फोरम, जिला सन्दर्भ समूह गणित शिक्षक लर्निंग केंद्र की गतिविधियों में नियमित प्रतिभाग करता हूं। जो कुछ सीखने को मिलता है उसे अपने विद्यालय के बच्चों व साथियों से साझा करता हूं। कक्षा शिक्षण में गणित जैसे विषय में बच्चे बिना भय के सीखने का प्रयास करते हैं।"

इसी प्रकार उन्होंने विज्ञान शिक्षण के बारे में बताया कि मैं "विषय वस्तु को बाहरी जीवन से जोड़ने का प्रयास करता हूं। विज्ञान की अवधारणाओं को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयोग/क्रियाकलाप एवं गतिविधियों को करने का प्रयास करता हूं। इसके लिए मैं किसी प्रकार के समय या प्रकरण की क्रमबद्धता को नहीं देखता हूं। जैसे ही मुझे कोई तरीका नजर आता है, मैं उसे ही बच्चों से साझा कर अवधारणाओं तक

पहुंचने का प्रयास करता हूं। उदाहरणार्थ–प्रार्थना सभा से पूर्व क्यारियों की सिंचाई करते–करते नल से पानी की फुहार बनाकर सूर्य की किरणों के साथ इन्द्रधनुष बनाकर वर्ग विक्षेपण को समझना। आज आपने मध्याह्न भोजन में क्या खाया? उनमें कौन–कौन से पोषक तत्व होते हैं? विद्यालय परिसर में उगे पेड़–पौधों का अवलोकन कर उनका वर्गीकरण शॉक, झाडी व वृक्ष में करना। वर्षा ऋतु में विद्यालय परिसर एवं आस–पास उगे विभिन्न प्रकार के च्यू (मशरुम) या फफूंद उगे होते है। उनका अवलोकन कर स्वपोषी, परपोषी एवं मृत्योपजीवी पौधों को समझना। विद्यालय में उगे कद्दू/लौकी को बोने से लेकर फूलने–फलने तक बराबर अवलोकन करते रहना व पौधों के जीवन चक्र को समझना। बीजों को क्यारियों में बोकर बीजों के अंकुरण को समझना। खेतों या विद्यालय परिसर में विभिन्न प्रकार की भोजन श्रृंखला को समझना। दीवाली के दिनों पटाखों में राकेट को जलाना, उसके जलने व ऊपर जाने की प्रक्रिया को समझकर न्यूटन के क्रिया–प्रतिक्रिया के नियम को समझना। सेल, बल्व, तार, कील, आदि से विद्युत परिपथ बनाना। ऐसे ही विभिन्न क्रियाकलापों एवं गतिविधियों को करवा कर बच्चों को अवधारणाओं तक पहुंचाने का प्रयास करना, इससे बच्चों को अवलोकन करने, प्रयोग कर प्रेक्षण नोट करने, विश्लेषण करने अपने विचारों को साझा करने तर्क करने व निष्कर्ष निकालने के अवसर मिलते हैं। जब मैं कभी अवकाश के समय भ्रमण या गांव में जाता हूं तो वहां मुझे शिक्षण सम्बन्धी कोई चीज या सामग्री दिखती है तो मै उसका फोटोग्राफ ले लेता हूं। वीडियो बनाकर रखता हूं तथा कक्षा शिक्षण में, मैं उनका उपयोग शिक्षण अधिगम सामग्री के रूप में करता हूं। जैसे–बरगद का पेड़ देखने का अवसर कहां से मिले? रेल के पटरियों के बीच खाली जगह छोडी जाती है

क्यों? बच्चों ने कभी पास से रेल की पटरियां देखी ही नहीं सिवाय टी.वी. के। माह जून में मैं गणित प्रशिक्षण हेतु देहरादून गया था। प्रशिक्षण के अन्तिम दिवस हम लोगों ने क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र देहरादून का भ्रमण किया जहां पर हमें बहुत सी वैज्ञानिक सामग्री विज्ञान के मॉडल आदि देखने को मिले। इनके फोटो व वीडियो बच्चों के साथ साझा करने हेतु काम आ रहे है। ट्रैफिक लाइट की फोटो/वीडियो उनकी ट्रैफिक की समझ को विकसित करता है।

इसके अतिरिक्त बच्चों के साथ मिलकर सृजनात्मक कार्य जैसे– कोलाज बनाना, मॉडल निर्माण करना, फूल–पत्तियों का संग्रह, बीजों का संग्रह, जड़ों का संग्रह, औषधीय पौधों का संग्रह, कंकाल तन्त्र, पैराशूट, रॉकेट, वाटर फिल्टर बनाना आदि। बच्चों से शोध कार्य करवाना जैसे– विद्यालय के आस–पास पाये जाने वाले स्थानीय पौधों की जानकारी एकत्रित करना, (किनगोड़, हिसंर, टेमरू, पुदीना, तुलसी, भेकल, बेडू आदि)। प्रार्थना सभा को रोचक बनाना, क्विज, निबन्ध, चित्रकला, विज्ञान ड्रामा, बाल अखबार, दीवार पत्रिका, प्रोजेक्ट कार्य आदि समय समय पर करवाते हैं।

उल्लेखनीय है कि उत्तराखण्ड में सर्वप्रथम बाल शोध मेला 'लाटा' से ही प्रारम्भ हुआ था। विद्यालय स्वच्छता एवं सौन्दर्यीकरण पर भी जोर दिया जाता है। इस साल राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत विद्यालय का स्कोर राष्ट्रीय स्तर पर 76/100 रहा। खरोला जी को 'डायरी लिखना' भी अच्छा लगता है। और डायरी को अपडेट करने का भी प्रयास करते हैं। विद्यालय एवं बच्चों के साथ हुए क्रियाकलापों, गतिविधियों को लिखना उन्हें अच्छा लगता है। इसके अलावा वे प्रधानाध्यापक का भी सहयोग करते हैं। खरोला जी स्कूल में विद्यालय विकास योजना, खेल गतिविधियों एवं सांस्कृतिक क्रियाकलापों को भी करवाते रहे हैं। सभी शिक्षक साथी एक टीम की भावना से काम करते हैं।

खरोला जी बताते हैं कि 35 वर्षों के शिक्षण काल में, मैं जिन–जिन विद्यालयों में रहा हूं वहां के समुदाय व अभिभावकों से मुझे पूर्ण सहयोग व सम्मान मिला है तथा मिल रहा है। आज मैं जिस विद्यालय में हूं, लगभग 20

वर्ष होने जा रहे हैं तथा आज दूसरी पीढी के बच्चों को पढा रहा हूं। आज बहुत से बच्चे ऐसे हैं जिनके माता–पिता मेरे पूर्व विद्यार्थी रहे हैं। मुझे यहां के समुदाय और अभिभावको द्वारा–पूर्ण सम्मान व सहयोग मिलता है। इस सत्र में छात्र संख्या 16 से बढ़कर 52 हो गयी है। आज लोगों का रूझान सरकारी विद्यालयों की ओर लौटा है। निजी विद्यालयों से भी बच्चे वापस आये हैं। इसलिए हमें इन बच्चों व इनके अभिभावकों की आकांक्षाओं पर खरा उतरना है जो एक चुनौती पूर्ण कार्य है। गुणवत्तापरक शिक्षा उपलब्ध करवाना एक लक्ष्य है। उनके इस प्रयासों को राज्य सरकार ने भी स्वीकृति देते हुए उन्हें राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया है।

खरोला जी के साथ बच्चों को सवाल पूछने की खूब जगह मिलाती है, बच्चे अपनी बातों को बेझिझक साझा करते हैं। बच्चों का उनसे काफी जुड़ाव रहता है। जब कभी वे 5–6 दिन के लिए प्रशिक्षण अथवा कार्यशालाओं या अवकाश पर रहते हैं। तब बच्चे जबाव तलब करते है, आप कहां थे? सर! आप क्यों जाते हैं? आपके बिना हमें अच्छा नही लगता। कभी–कभी बच्चे उन्हें भावुक कर देते हैं। खरोला जी हमेशा सचेत रहते हैं कि कैसे इन नन्हे इंसानों को अपने चारों ओर की दुनिया को जानना–समझना सिखाया जाये। कैसे शिक्षा पाने में उनकी सहायता की जाये। कैसे बच्चों में इंसानियत के प्रति विश्वास, मानव की गरिमा व नेकी में विश्वास जगाया जाये?

समय–समय पर उनके लिए बच्चों द्वारा लिखे गए कोमल उद्गार वे बहुमूल्य सम्पत्ति के मानिंद संजो कर रखते हैं। पिछली बार जैसे ही बच्चों को उनके जन्मदिन का पता चला उन्होंने आनन–फानन में कापी के पेज, आर्ट पेपर, शादी के कार्ड को ग्रीटिंग कार्ड का रूप देकर उन्हें जन्मदिन की बधाई व शुभकामनाऐं दी। जो उनके पास सुरक्षित हैं। एक चित्र बनाकर लिखा था– ''हमारे प्यारे गुरू जी'' सर! आप बहुत अच्छे हो, आप बहुत अच्छा पढाते हैं। आपको जन्मदिन की बधाई। सर! हम आपको कुछ देने के काबिल नही हैं। भगवान आपको लम्बी उम्र दे। सर! आप बहुत अच्छे हैं, मुझे आपकी बहुत याद आती है, आप मेरे बेस्ट सर है। मेरे प्यारे

सर! "आपको जन्मदिन की शुभ कामनाएं। एक बच्ची ने सुन्दर फूल बनाकर लिखा था, सर! ''आपकी तरह मुस्कराता फूल।'' एक बहुत अच्छी कलाकृति बनाकर लिखा था– ''हैपी बर्थ डे सर।'' बहुत सारी बच्चियों ने तुकान्त कविताओं व शायरी भी लिखी थी, कुछ ने दूसरे दिन पेन, मकई, ककडी, आदि भेंट की थी।

खरोला जी ने बताया कि बच्चों की अभिव्यक्ति व अपनत्व देख कर मेरा भावुक होना स्वाभाविक ही है, और मैं सोचता ही रहा कि मैं इन बच्चों के लिए क्या कर सकता हूं? मैं उनकी गणित एवं अंग्रेजी सीखने में मदद करता हूं। साथ ही उनके जीवन के सवालों से भी रू–ब–रू होता हूं। निरंतर कोशिश रहती है कि जो भी कहीं से नया सीखता हूं उसके आलोक में कैसे बच्चों की कक्षा में उस ज्ञान और विचार को अमल कर पाऊं। कुछ नवीन तरीकों को ढूंढता रहता हूं, जिससे बच्चों की शिक्षण में रोचकता बनी रही। हां, मैं उनसठ वर्ष का होने होने को हूं, पर अपने को अपडेट रखने का प्रयास करता हूं। यह ताकत मुझे बच्चों से ही मिलती है। इसी आशा और विश्वास के साथ, ''आशाओं के पंख फैलाये चले हमारा काफिला–चले। हमारा काफिला। वे अक्सर गुनगुनाते हैं।

उन्होंने अपनी यादों में झांक कर बताया कि मैं इसी विद्यालय, लाटा में 1989 से 1993 के दौरान रहा। 1991 के भूकम्प में मैं परिवार सहित इसी गांव में रहता था। विद्यालय भवन ध्वस्त हो चुका था। हम सड़कों पर रहकर, भारतीय सेना के कुछ जवानों की सहायता से उस समय ध्वस्त बिल्ड़िगं से टिन शीट, लकड़ी, तख्ते इकट्ठे कर एक महीने में दो कमरों के कक्षा–कक्ष का निर्माण किया। इसके पश्चात प्रशासन द्वारा दो शरणालय बनाये गये जहां पर कक्षाएं संचालित की गयी जो आज भी वैसे ही साक्षी हैं। इस विद्यालय में उस समय वृक्षारोपण करवाया गया जो आज एक छोटे उपवन के रूप में मौजूद हैं। ऐसी बहुत सारी यादें बाकी हैं। फिर भी मुझे आज भी अपने कार्यों के प्रति संतुष्टि है तथा और अच्छा करने का प्रयास करता रहूंगा।

(शूरवीर सिंह खरोला से हुई खजान सिंह व प्रमोद पैन्युली की बातचीत पर आधारित)